(2) बचत = निवेश विधि (S = I approach)

रेखाचित्र 4 में उपभोग फलन के आधार पर उपभोग वक्र और उसके अनुरूप बचत वक्र दिखाई गई हैं। उपभोग वक्र पर विभिन्न बिन्दु आय के विभिन्न स्तरों पर प्रत्याशित उपभोग व्यय दर्शाते हैं। इसी प्रकार बचत वक्र पर विभिन्न बिन्दु आय के विभिन्न स्तरों पर प्रत्याशित बचत दर्शाते हैं। ये दोनों वक्र एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि Y = C + S.

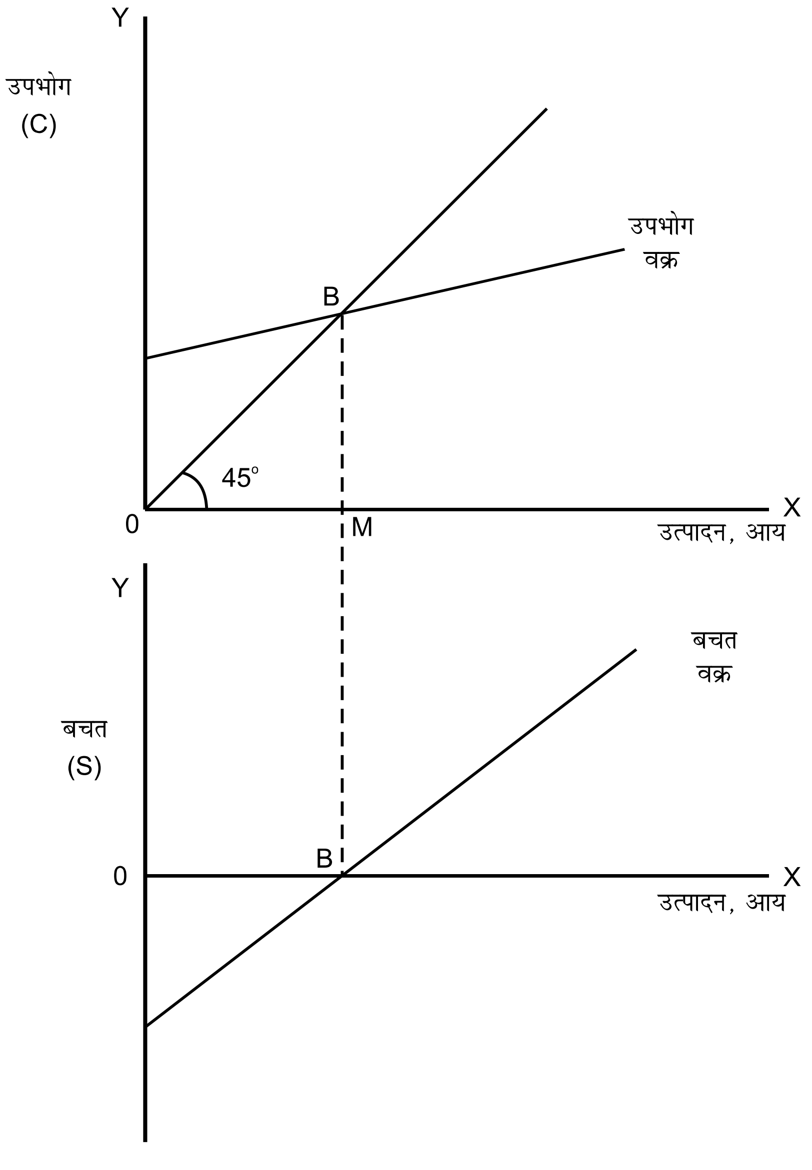

रेखाचित्र 4 : उपभोग वक्र और बचत वक्र

निवेश व्यय

हमने स्वायत्त निवेश की परिकल्पना की है जिसका अर्थ है कि उत्पादन के हर स्तर पर निवेश व्यय स्थिर रहता है। रेखाचित्र 5 में निवेश वक्र दर्शायी गयी है।

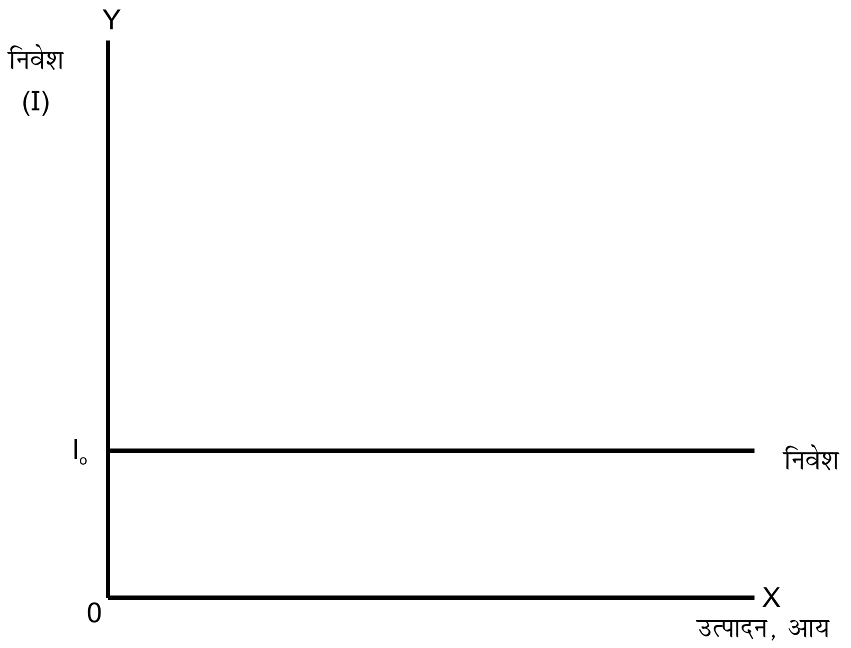

रेखाचित्र 5 : निवेश वक्र

निवेश वक्र OX अक्षर के समानान्तर है क्योंकि निवेश व्यय स्थिर है।

उत्पादन का संतुलन स्तर

बचत वक्र और निवेश वक्र दोनों को एक साथ रेखाचित्र 6 में दिखाया गया है। ये दोनों वक्र एक दूसरे को E पर काटती हैं। यह बिन्दु उत्पादन के OM स्तर को दर्शाता है और यह उत्पादन का संतुलन स्तर है।

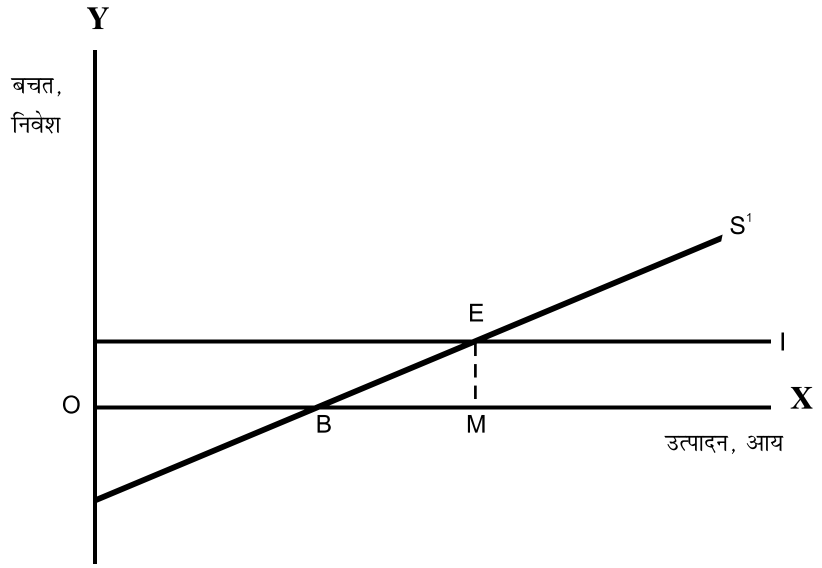

रेखाचित्र 6 : बचत चक्र और निवेश वक्र द्वारा निर्धारित संतुलन

संतुलन का अर्थ

रेखाचित्र 6 में E बिन्दु दर्शाता है कि OM उत्पादन पर परिवारों की आयोजित बचत फर्मों के आयोजित निवेश के बराबर हैं। जब आयोजित बचत व आयोजित निवेश बराबर नहीं होते तो उत्पादन में परिवर्त्तन होता है और इस परिवर्त्तन से ये दोनों बराबर हो जाते हैं। यदि उत्पादन कर स्तर OM है तो आयोजित बचत EM है और आयोजित निवेश भी EM है। अतः यह उत्पादन का संतुलन स्तर है। इस स्तर में परिवर्त्तन की कोई प्रवृति नहीं है।

यदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन व आय का स्तर OM से अधिक है तो रेखाचित्र दर्शाता है कि बचत वक्र निवेश वक्र के ऊपर है। अतः आय के इस स्तर पर बचत निवेश से ज्यादा हैं। दूसरे शब्दों में कुल व्यय कुल उत्पादन से कम है। परिणामस्वरूप माल का स्टाक (अप्रत्याशित) बढ़ जाएगा। इस स्थिति को ठीक करने के लिए फर्म उत्पादन घटा देंगी। जब उत्पादन घट कर OM हो जाएगा तो संतुलन की स्थिति आ जाएगी। इस स्तर पर प्रत्याशित बचत और निवेश बराबर हैं और किसी प्रकार के परिवत्तर्न की प्रवृति नहीं होगी।

यदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन का स्तर OM से कम हो तो इस स्तर पर बचत निवेश से कम होगी। इसका अर्थ है कि माल का स्टॉक घट जाएगा। इस स्थिति को ठीक करने के लिए फर्म उत्पादन बढ़ाएँगी। जब उत्पादन बढ़कर OM हो जाएगा तो प्रत्याशित बचत और निवेश बराबर होंगे और किसी भी प्रकार के परिवर्त्तन की प्रवृति नहीं होगी। अतः संतुलन की स्थिति स्थापित हो जाएगी।

इस प्रकार उत्पादन का केवल OM स्तर ही संतुलन स्तर है जिस पर प्रत्याशित बचत और प्रत्याशित निवेश बराबर हैं।

संतुलन की स्थिति में आयोजित व्यय और आयोजित उत्पादन बराबर होते हैं।

इसे एक संख्यात्मक उदाहरण द्वारा सरलता से समझा जा सकता है।

मान लीजिए उपभोग फलन : C = 1000 + 0.67 Y है और इसके अनुरूप बचत फलन = S = — 1000 + 0.33 Y होगा! तालिक 4 में कालम (1) में आय व उत्पादन के विभिन्न स्तर दिए गए हैं। उपभोग फलन व बचत फलन के आधार पर कालम (2) व (3) में क्रमशः आयोजित उपभोग व्यय और बचत दिखायी गई है आयोजित निवेश 200 माना गया है। कालम (6) में उत्पादन व आय के विभिन्न स्तर पर समग्र माँग (कालम (2) व (4) का योग) दर्शायी गयी है।

तालिका 4 उत्पादन के स्तर का निर्धारण (करोड़ रु. में)

उत्पादन और आय	प्रायोजित उपभोग	प्रायोजित बचत (3)=(1)-(2)	प्रायोजित निवेश	उत्पादन और आय (5) = (1)	समग्र मांग (6)=(2)+(4)	उत्पादन में प्रवृत्ति
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
4200	3800	400	200	4200>	4000	कमी
3900	3600	300	200	3900>	3800	कमी
3600	3400	200	200	3600=	3600	संतुलन
3300	3200	100	200	3300<	3400	वृद्धि
3000	3000	0	200	3000<	3200	वृद्धि
2700	2800	-100	200	2700<	3000	वृद्धि

इस तालिका की पहली पंक्ति को ध्यान से पढ़े तो पता चलता है कि यदि उत्पादन और आय का स्तर (समग्र पूर्ति) 4200 करोड़ रु है तो समग्र माँग केवल 4000 करोड़ रुपये के उत्पादन की है। इस स्थिति में स्टॉक में अप्रयोजित वृद्धि होगी (200 करोड़ रुपये के मूल्य का स्टॉक)। इस स्थिति को ठीक करने के लिए फर्में उत्पादन घटा देंगी।

तालिका की अन्तिम पंक्ति इस स्थिति से एकदम विपरीत स्थिति दर्शा रही है। फर्मो का कुल उत्पादन 2700 करोड़ रु. का है लेकिन इस स्तर पर समग्र माँग 3000 करोड़ रु. के माल की है। इस स्थिति में स्टॉक में अनचाही व अप्रयोजित कमी आ जाएगी। इस कमी को दूर करने के लिये फर्में उत्पादन अधिक करेंगी।

अत: जब भी प्रत्याशित व्यय (समग्र मांग) प्रत्याशित उत्पादन (समग्र पूर्ति) से अधिक होता है तो उत्पादन का स्तर बढ़ाया जाता है। जब प्रत्याशित व्यय प्रत्याशित उत्पादन से कम होता है तो उत्पादन के स्तर को घटाया जाता है। संतुलन की स्थिति तभी होती है जब प्रत्याशित आय या उत्पादन (समग्र पूर्ति) प्रत्याशित व्यय (समग्र माँग) के बराबर है। तालिका 4 में उत्पादन का यह स्तर 3600 करोड़ रुपये है जिस पर समग्र माँग भी 3600 करोड़ रु. है।

गुणक

हमने इस अध्ययन में यह परिकल्पना भी की है कि सीमान्त उपभोग प्रवृति स्थिर रहती है। आय में परिवर्त्तन से इसमें परिवर्त्तन नहीं आता। अब तक के अध्ययन से हमें यह भी ज्ञात हुआ कि आय, उत्पादन व रोजगार का स्तर कितना होगा यह समग्र माँग पर निर्भर करता है क्योंकि पूर्ति तो पूर्णतया लोचदार है। दो क्षेत्रीय माडल में उपभोग व्यय और निवेश व्यय यही दो समग्र माँग के घटक हैं। उपभोग व्यय आय (उत्पादन) पर निर्भर करता है। यदि अर्थव्यवस्था में उत्पादन, आय व रोजगार का स्तर बढ़ाना हो तो निवेश को बढ़ाना होगा। जब निवेश व्यय बढ़ाया जाता है तो इससे आय (उत्पादन) में होने वाली वृद्धि निवेश में वृद्धि से कई गुना होती है। निवेश में वृद्धि का जितने गुना आय में वृद्धि होती है उसे गुणक कहते हैं।

गुणक की प्रक्रिया को एक संख्यात्मक उदाहरण द्वारा सरलता से समझा जा सकता है। यह ध्यान रखें कि अर्थव्यवस्था में जितना व्यय बढ़ता है उतनी ही आय बढ़ती है।

मान लीजिए अर्थव्यवस्था में सीमान्त उपभोग प्रवृति 0.8 है और निवेश 1000 रुपये बढ़ता है अर्थात् व्यय 1000 रु. बढ़ा जिससे आय भी 1000 रु. बढ़ेगी। बढ़ी हुई आय का 0.8 भाग उपभोग पर व्यय किया जाएगा क्योंकि सी.उ.प्र. 0.8 है। अत: अब उपभोग व्यय 800 रुपये बढ़ेगा जिससे आय 800 रुपये बढ़ेगी। आय में 800 रुपये की वृद्धि से उपभोग व्यय 800 x 0.8 = 640 रुपये बढ़ेगा। इससे आय 640 रुपये बढ़ेगी। फिर उपभोग व्यय 640 x 0.8 = 512 रु. बढ़ेगी। इससे आय 512 रु. बढ़ेगी। इस प्रकार आय में वृद्धि और उपभोग में वृद्धि की एक श्रृंखला शुरू हो गई। आय और व्यय में होने वाली हर अगली वृद्धि कम होती जा रही है क्योंकि बढ़ी हुई आय का एक भाग बचाया जा रहा है। (सी.ब.प्र. = 0.2) आय में वृद्धि की एक अनन्त श्रृंखला बन जाएगी जो शून्य की ओर अग्रसर है।

तालिका 5 में निवेश में परिवर्त्तन के कारण आय और उपभोग में परिवर्त्तनों की श्रृंखला दिखाई गई है।

तालिका 5 गुणक की प्रक्रिया

(आधार : Δ निवेश = 1000, सीमांत उपभोग प्रवृति = 0.8 = 4/5)

आय में वृद्धि (ΔY) (I)	उपभोग व्यय में वृद्धि (ΔC) (II)
1000	1000 (0.8)
1000 (0.8)	$1000\ (0.8)^2$
$1000\ (0.8)^2$	$1000\ (0.8)^3$
$1000\ (0.8)^3$	$1000\ (0.8)^4$

$$\Sigma\Delta Y = 1000 + 1000(0.8)+1000(0.8)^2.....$$
$$= 1000\,[1+0.8+(0.8)^2.....]$$
$$= 1000\left(1000 \times \frac{1}{1-0.8}\right)$$
$$= 1000 \times \frac{1}{0.2}$$
$$= 5000 \text{ रु.}$$

$$\Sigma\Delta C = 1000(0.8)+1000(0.8)^2+1000(0.8)^3.....$$
$$= 1000(0.8)\,[1+0.8+(0.8)^2.....]$$
$$1000 \times \frac{4}{5} \times \frac{1}{1-\frac{4}{5}}$$
$$1000 \times \frac{4}{5} \times \frac{1}{\frac{1}{5}}$$
$$1000 \times \frac{4}{5} \times \frac{5}{1}$$
$$= 4000 \text{ रु.}$$

इस तालिका में पहले कालम में आय में विभिन्न चरणों में होने वाली वृद्धि दिखाई गई है। निवेश व्यय में 1000 रु. की वृद्धि से आय में 1000 रु. की वृद्धि होती है। दूसरे कालम में उपभोग व्यय में विभिन्न चरणों में होने वाली वृद्धि दिखाई गई है। आय में 1000 रु. की वृद्धि से उपभोग व्यय में 1000 x 0.8 वृद्धि होती है

क्योंकि सी.उ.प्र. 0.8 है। उपभोग व्यय में जितनी वृद्धि हुई अगले चरण में आय में उतनी ही वृद्धि होती है। इस प्रकार यदि आय में विभिन्न चरणों में होने वाली वृद्धि को लिख लें तो यह एक श्रृंखला बन जाती है। इस श्रृंखला का योग गणित एक विधि द्वारा निकाला जा सकता है। इसका योग निकालने का सूत्र है : $\frac{1}{1-\frac{1}{r}}$ जिसमें r श्रृंखला का सार्ख अनुपात (common ratio) है। इस श्रृंखला में सार्ख अनुपात 0.8 है जो कि सी.उ.प्र. है। अतः निवेश में 1000 रु. के परिवर्त्तन से आय में कुल परिवर्त्तन $= 1000 \text{ x } \frac{1}{1-0.8} = 1000 \text{ x } \frac{1}{0.2} = 5000$ रु.।

क्योंकि 1 - सी.उ.प्र. = सी.ब.प्र. जो इस उदाहरण में 0.2 है तो :

$$\text{आय में कुल परिवर्त्तन} = 1000 \text{ x } \frac{1}{\text{सी.ब.प्र.}}$$

$$= 1000 \text{ x } \frac{1}{0.2}$$

$$= 5000 \text{ रू.}$$

इस प्रकार निवेश में 1000 रु. की वृद्धि से आय में इसका 5 गुना वृद्धि हुई। 5 गुणक का मूल्य है।

$$\text{गुणक} = \frac{\Delta Y}{\Delta I} = \frac{5000}{1000} = 5$$

गुणक का आकार सी.उ.प्र. के मूल्य पर निर्भर करता है क्योंकि गुणक $= \frac{1}{1-\frac{1}{\text{सी.उ.प्र.}}}$

जितनी अधिक सी.उ.प्र. होगी उतना ही अधिक गुणक का मूल्य होगा।

एक अन्य रूप में गुणक $= \frac{1}{\text{सी.ब.प्र.}}$

जितनी अधिक सी.ब.प्र. होगी उतना ही कम गुणक का मूल्य होगा।

आधिक्य माँग और अभावी माँग की समस्याएँ और उन्हें ठीक करने के उपाय

अब तक के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था में उत्पादन, आय व रोजगार के स्तर का निर्धारण केवल समग्र माँग के स्तर द्वारा होता है। यदि समग्र माँग पूर्ण रोजगार के उत्पादन स्तर के बराबर है तो अर्थव्यवस्था में न केवल संतुलन की स्थिति होगी बल्कि पूर्ण रोजगार की स्थिति भी होगी। इसे पूर्ण रोजगार संतुलन की स्थिति कहते हैं। यदि समग्र माँग पूर्ण रोजगार के उत्पादन स्तर से कम है तो यह अभावी माँग की स्थिति होगी। इस अवस्था में अर्थव्यवस्था में ना तो पूर्ण रोजगार और ना ही संतुलन की स्थिति है। यदि समग्र माँग पूर्ण रोजगार के उत्पादन से अधिक है तो यह माँग आधिक्य की स्थिति होगी। इससे कीमतें बढ़ने लगेंगी।

अब हम विस्तार से एक एक करके इन समस्याओं पर विचार करेंगे।

अभावी माँग की समस्या

यदि अर्थव्यवस्था में समग्र माँग पूर्ण रोजगार स्तर की समग्र पूर्ति से कम है तो अर्थव्यवस्था में अभावी माँग की स्थिति है। अभावी माँग के कारण अवस्फीति अन्तराल की स्थिति उत्पन्न होती है। इसके कारण

अर्थव्यवस्था में आय, उत्पादन और रोजगार का स्तर घटने लगता है और अर्थव्यवस्था अल्प रोजगार संतुलन (under employment equilibrium)की स्थिति में पहुँच जाती है। रेखाचित्र 7 में अभावी माँग की स्थिति दर्शायी गयी है।

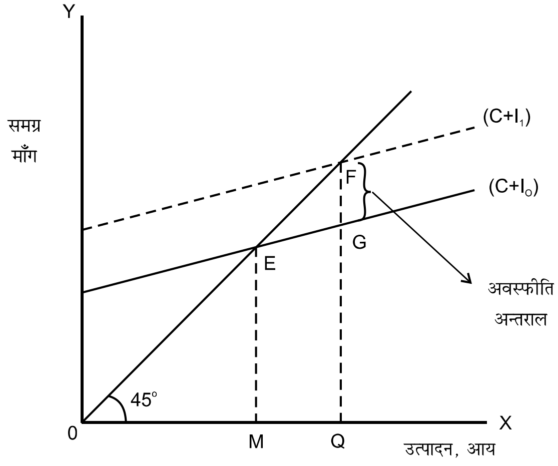

रेखाचित्र 7 – अभावी माँग, अवस्फीति अन्तराल

OY अक्ष पर समग्र माँग दर्शायी गई है। OX अक्ष पर आय व उत्पादन का स्तर दर्शाया गया है। पूर्ण रोजगार के स्तर पर आय व उत्पादन OQ है। अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार संतुलन के लिये समग्र माँग भी इतनी ही होनी चाहिये। रेखाचित्र में यह माँग FQ है क्योंकि FQ = OQ। यह तब संभव है जब अर्थव्यवस्था में समग्र माँग वक्र $(C+I_1)$ हो। यदि समग्र माँग वक्र $(C+I_0)$ है तो OQ उत्पादन स्तर पर समग्र माँग केवल GQ है। अतः समग्र माँग पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति से कम है क्योंकि समग्र माँग GQ है और समग्र पूर्ति FQ या OQ है। दोनों का अन्तर FG है। यह अन्तर (FG) अवस्फीति अन्तराल है। अर्थव्यवस्था असंतुलन की स्थिति में है। इस अवस्फीति अन्तराल के कारण अर्थव्यवस्था में परिवर्त्तन होने शुरू होंगे।

समग्र पूर्ति के समग्र मांग से अधिक होने के कारण स्टाक में अप्रत्याशित व अनियोजित वृद्धि हो जाएगी। इसके फलस्वरूप फर्म रोजगार व उत्पादन के स्तर को कम कर देंगी यानि समग्र पूर्ति घट जाएगी। ये परिवर्त्तन तब तक होते रहेंगे जब तक समग्र पूर्ति घटकर समग्र माँग के बराबर ना हो जाए। जब ये दोनों बराबर हो जाएँगे तो अर्थव्यवस्था संतुलन की स्थिति में आ जाएगी। लेकिन यह संतुलन अल्प रोजगार की स्थिति में है। इसे अल्प रोजगार संतुलन की स्थिति कहते हैं। OM उत्पादन स्तर पर अर्थव्यवस्था अल्परोजगार संतुलन की स्थिति में हैं। $(C+I_0)$ समग्र माँग वक्र है। इस प्रकार अभावी माँग की स्थिति से अवस्फीति अन्तराल उत्पन्न होता है जो अर्थव्यवस्था को अल्प रोजगार संतुलन की स्थिति में धकेल देता है।

आधिक्य माँग की समस्या

यदि अर्थव्यवस्था में समग्र माँग पूर्ण रोजगार के स्तर पर समग्र पूर्ति से अधिक है तो यह आधिक्य माँग की स्थिति है। आधिक्य माँग से स्फीति अन्तराल उत्पन्न होता है जिससे मुद्रा स्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है अर्थात् कीमतें बढ़ने लगती हैं। रेखाचित्र 8 में आधिक्य माँग की स्थिति दर्शायी गयी है।

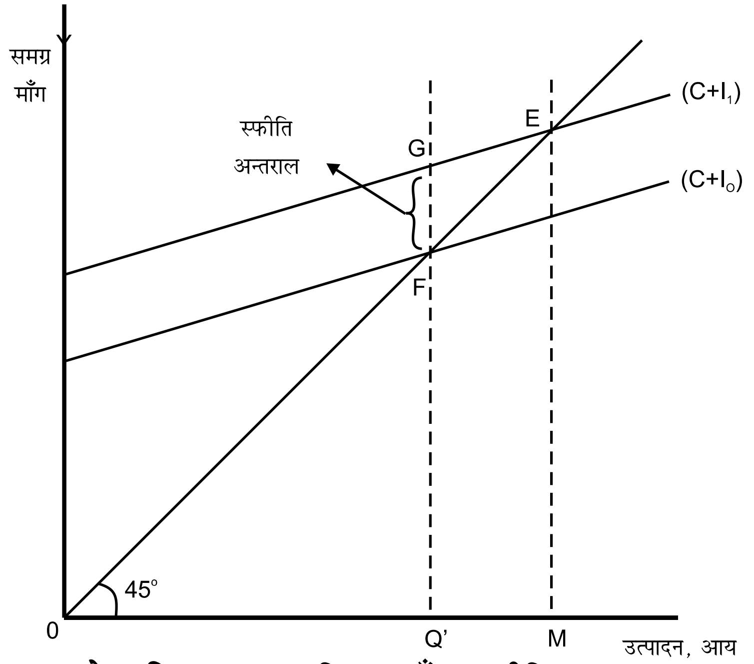

रेखाचित्र 8 – अधिक्य माँग, स्फीति अन्तराल

OX अक्ष पर उत्पादन व आय के स्तर को मापते हैं। OY अक्ष पर उत्पादन व आय के स्तर को मापते हैं। OY अक्ष पर समग्र माँग (C+I) मापते हैं। OQ पूर्ण रोजगार का उत्पादन व आय स्तर हैं। यदि अर्थव्यवस्था में समग्र माँग वक्र (C+I$_O$) है तो समग्र माँग पूर्ण रोजगार के स्तर की समग्र पूर्ति के बराबर है। समग्र माँग OQ उत्पादन व आय के स्तर पर FQ है और समग्र पूर्ति OQ। OQ और FQ दोनों बराबर हैं क्योंकि F बिन्दु 45° रेखा पर है। अतः अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार संतुलन की स्थिति में होगी।

यदि अर्थव्यवस्था में समग्र माँग वक्र (C+I$_1$) है तो पूर्ण रोजगार के उत्पादन स्तर (OQ) पर समग्र माँग GQ है क्योंकि G बिन्दु (C+I$_1$) समग्र माँग वक्र पर है। और GQ, OQ से अधिक है। दोनों का अन्तर GF है। अतः अर्थव्यवस्था में आधिक्य माँग की स्थिति है और GF स्फीति अन्तराल है। पूर्ण रोजगार पर समग्र पूर्ति पर समग्र माँग का आधिक्य स्फीति अन्तराल कहलाता है। इस अन्तराल के कारण कीमतें बढ़ती हैं। कीमतों के बढ़ने से OQ उत्पादन का मौद्रिक मूल्य बढ़ जाएगा और ये बढ़कर OM हो जाएगा। OM, OQ उत्पादन का ही बढ़ी हुई कीमतों पर मौद्रिक मूल्य है। ये वृद्धि केवल मौद्रिक है, वास्तविक नहीं। मौद्रिक मूल्य OM होने पर समग्र माँग और समग्र पूर्ति (मौद्रिक) दोनों EM के बराबर है अतः अर्थव्यवस्था संतुलन की स्थिति में है लेकिन मुद्रा स्फीति की समस्या उत्पन्न हो गई।

आय व रोजगार निर्धारण का अध्ययन अभी तक केवल दो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में किया गया है। अभावी माँग और आधिक्य माँग की समस्याओं को दूर करने के दो उपाय पाठ्यक्रम का भाग है। इनमें से एक उपाय सरकारी व्यय में परिवर्त्तन है। अतः अब हम इस अध्ययन में सरकारी क्षेत्र को एक सरल रूप में शामिल कर रहे हैं।

तीन क्षेत्रीय (परिवार, फर्म व सरकार) अर्थव्यवस्था में समग्र माँग उपभोग व्यय, निवेश व्यय और सरकारी व्यय का योग होती है। सरकारी व्यय को समग्र माँग के घटक के रूप में शामिल करने पर समग्र माँग वक्र उत्पादन के विभिन्न स्तर पर (C+I+G) को दर्शाती है जैसा कि रेखाचित्र 9 में दिखाया गया है।

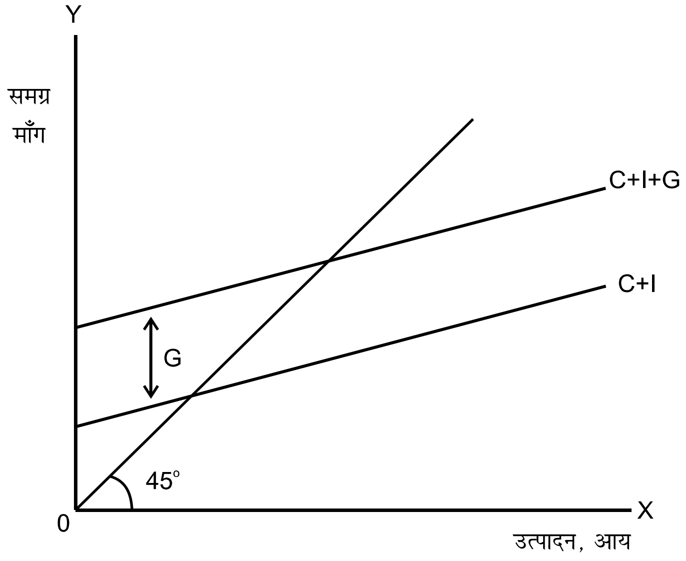

रेखाचित्र 9 – सरकारी व्यय का समग्र माँग पर प्रभाव

हमने निवेश व्यय की भाँति सरकारी व्यय को भी स्वायत्त मान लिया है अर्थात् सरकारी व्यय उत्पादन के स्तर से प्रभावित नहीं होता। रेखाचित्र में (C+I) वक्र दो क्षेत्रों के संदर्भ में समग्र माँग है। (C+I+G) वक्र उत्पादन के विभिन्न स्तर पर तीन क्षेत्रों की समग्र माँग दर्शाती है। (C+I+G) वक्र (C+I) वक्र के ऊपर है और समानान्तर है क्योंकि इन दोनों में अन्तर (G) सरकारी व्यय के बराबर है जिसे हमने स्थिर माना है (जो उत्पादन के स्तर के साथ परिवर्त्तित नहीं होता)।

रेखाचित्र 10 में तीन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में अभावी माँग की स्थिति और उससे उत्पन्न होने वाले अवस्फीति अन्तराल को दर्शाया गया है। इसी प्रकार हम तीन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आधिक्य माँग की स्थिति व उससे उत्पन्न होने वाले स्फीति अन्तराल को रेखाचित्र द्वारा दर्शा सकते हैं। तीन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में समग्र माँग वक्र (C+I+G) होगी ना कि (C+I)!

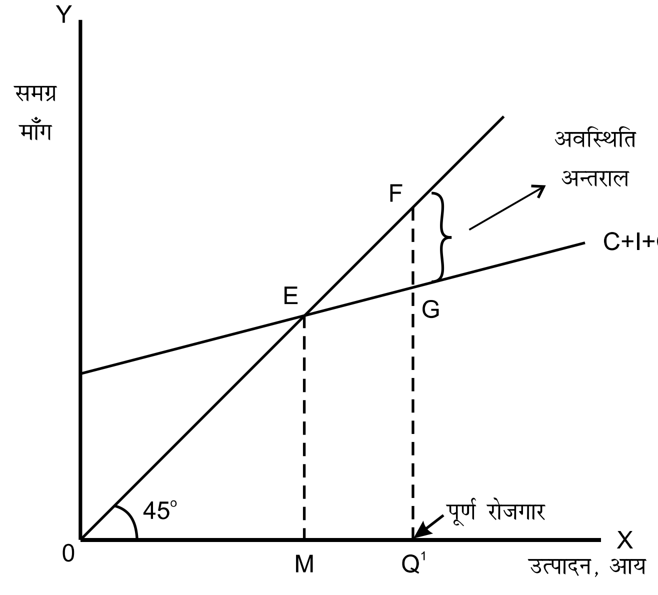

रेखाचित्र 10 – तीन क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में अभावी माँग

अभावी माँग की समस्या को दूर करने के उपायः

अभावी माँग की समस्या को हल करने के केवल दो उपायों पर विचार किया जाएगा।

(i) सरकारी व्यय में वृद्धि

रेखाचित्र 11 में OQ पूर्ण रोजगार पर उत्पादन व आय स्तर हैं। अर्थव्यवस्था में समस्त माँग वक्र (C+I+Go) है। OQ उत्पादन स्तर पर समग्र माँग GQ है जो पूर्ण रोजगार पर समग्र पूर्ति (FQ=OQ) से FG कम है। FG अवस्फीति अन्तराल है। यदि सरकारी व्यय में FG वृद्धि कर दी जाए तो नई समग्र माँग वक्र ($C+I+G_1$) हो जाएगी।

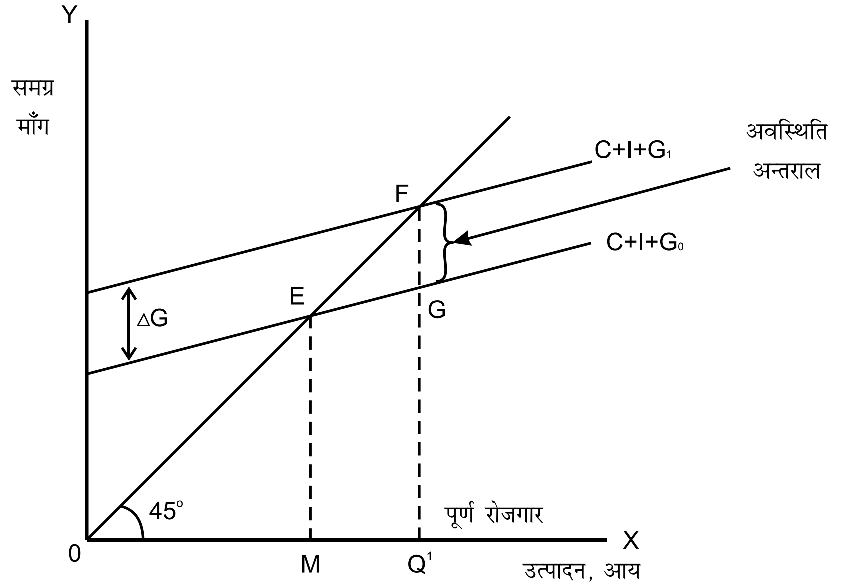

रेखाचित्र 11 – सरकारी व्यय में वृद्धि से अभावी माँग की समस्या का हल

यह नई समग्र माँग वक्र दर्शाती है कि पूर्ण रोजगार के उत्पादन स्तर (OQ) या (FQ) पर समग्र माँग भी FQ है। अतः अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार संतुलन की स्थिति में है

अभावी माँग की स्थिति समाप्त हो गई व अवस्फीति अन्तराल भी समाप्त हो गया।

इस प्रकार सरकारी व्यय में वृद्धि करके अभावी माँग की समस्या को समाप्त किया जा सकता है।

(ii) फर्मों द्वारा निवेश के लिए बैंकों से लिए जाने वाले ऋण में वृद्धि

यदि फर्में बैंकों से निवेश के लिए अधिक ऋण लें तो निवेश व्यय बढ़ जाएगा जिससे समग्र माँग बढ़ जाएगी। इसके लिए साख (ऋण) की उपलब्धता को बढ़ाया जाता है। यह कार्य सुरक्षित निधि अनुपात को कम करके किया जाता है। सुरक्षित निधि अनुपात कम करने से बैंकों की ऋण देने की क्षमता बढ़ जाती है। बैंक दर को कम करके ब्याज दर को घटाया जा सकता है। ब्याज दर कम होने से फर्में अधिक ऋण लेने के लिए प्रोत्साहित होंगी। खुले बाजार के कार्यकलापों द्वारा मुद्रा की पूर्ति को बढ़ाया जा सकता है। इससे ऋण की उपलब्धता बढ़ती है। जब फर्में निवेश के लिए ऋण लेती हैं तो समग्र माँग बढ़ जाती है और अभावी माँग की समस्या का समाधान हो जाता है।